लोक संस्कृति की स्मृति रेखा : नर्मदा

- डॉ. श्यामसुन्दर दुबे

पिछले दिनों अमरकंटक की यात्रा करने का अवसर अनायास सुलभ हुआ। मन में अमरकंटक की एक छवि थी, पढ़े, सुने के आधार पर निर्मित एक बाँकी-सी छवि। जब मैं चौथी कक्षा में पढ़ता था, तब अमरकंटक पर उसमें एक पाठ पढ़ाया जाता था। एक चित्र भी तब उस पाठ के साथ पुस्तक में छपा था, ऊँचे पहाड़ से गिरती जलधारा का। चित्र के नीचे शीर्षक था कपिलधारा। पाठ तो याद नहीं रहा- समय के प्रवाह में शब्दों के भीतर फैला अमरकंटक का जुगराफिया फेडअप होता गया - केवल चेतना में वह चित्र टंगा रहा और जब भी कोई अमरकंटक की चर्चा करता तब कपिलधारा का वह चित्र मेरे भीतर से नमूदार हो उठता था। स्मृति में अमरकंटक इतना ही भर था। बाद में एक यात्रा-विवरण पढ़ने को मिला। हिन्दी के प्रसिद्ध कवि अज्ञेय अमरकंटक की यात्रा पर आए थे। अपनी यात्रा को केन्द्र बनाकर यात्रा विवरण लिखा वह अमरकंटक की प्राकृतिक भूभौतिकी के साथ भावुक मन की प्रतिक्रियाओं के रूप में था। इस यात्रा-विवरण ने मेरे भीतर अमरकंटक को देखने की तीव्र उत्सुकता जगाई।

फिर एक निबंध डॉ. विद्या निवास मिश्र का 'अमरकंटक की सालती स्मृति' पढ़ा। इस निबंध ने अमकंटक मेरे स्मृति-वितान में और विस्तारित किया। प्राकृत और संस्कृत साहित्य में तो अमरकंटक का स्मरण करते हुए - इसे आम्रकूट का संबोधन दिया था - बाद में वही आम्रकूट अमरकंटक बन गया। लोक भाषा में उतरकर 'आम्र' अमर बना और 'कूट' कंटक बना । अच्छा ही हुआ एक नई अर्थच्छवि आम्रकूट को मिली, अन्यथा न तो अब आम के छतनार वन हैं और न बाँस के वे भिरे जिनका वर्णन कालिदास के मेघदूत में है।

पुराण और लोक में स्मृति जीवी अमरकंटक आज सचमुच एक अनियारे काँटे की तरह ही है - नर्मदा के इस उद्गम स्थल के साथ न जाने कितनी-कितनी मीठी भेदक-चरफर स्मृतियाँ आज भी इस नुकीले शिखरी मेकल नभ की आभा में दिपदिपाती हैं।

इन स्मृतियों में डूबकर ही मैंने कटनी और बिलासपुर को जोड़ने वाली रेलवे लाईन के पेन्ड्रा रोड स्टेशन पर भोर में अपनी आँखे खोली। पेंड्रा रोड से लगभग चालीस किलोमीटर की यात्रा बस मार्ग से करना थी। रात्रि के अंतिम प्रहर का सुरमई उजास में बदलता अँधेरा हमारे आसपास था, हमारी जीप पहाड़ों की ऊँचाई नाप रही थी। दोनों ओर से सघन वृक्षों से सरसराती हवा हमें छू रही थी। जाती ठंड के दिन थे, किंतु शरीर में फुरहरी जाग रही थी। शरीर में मितली सी उठी, तो मैंने सोचा रात्रि जागरण का दुष्परिणाम हो सकता है।

अमरकंटक की केन्द्रीय सत्ता तो नर्मदा ही है। नर्मदा जिस ऊँचाई से अपना आकार ग्रहण करती हैं - वह कोई निर्धारित ऊँचाई नहीं है - बहुत शांत और एकांत विस्तार से नर्मदा जन्म लेती है। पुराण कहते हैं कि नर्मदा का जन्म शंकर के श्रम-सीकरों से हुआ है। यह जो मेकल की पहाड़ी है, इसकी दक्षिण दिशा में प्रसारकामी है - सतपुड़ा; और इसकी उत्तरी सीमा में फैला हुआ है - विंध्य । प्रकृति का जो विहंगम दृश्य यहाँ निर्मित होता है - वह समाधिस्थ महादेव शंकर की कल्पना के रूप में ही प्रकट होता है। जैसे समाधिलीन शंकर की एक भुजा सतपुड़ा हो और एक भुजा विंध्य हो और मेकल का उन्नत शीर्ष ही शंकर का पवित्र मस्तक हो। इसी मस्तक पर नर्मदा के जन्मस्थानी जल-कण जैसे शंकर के मस्तक पर उभरी पसीनें की बूँदे हों। महादेव शंकर आर्य और अनार्य दोनों के परमाराध्य हैं। इस प्राकृतिक विन्यास में शंकर का यही स्वरूप व्यक्त है। देवाधिदेव शंकर आदि पुरुष हैं। आदि पुरुष के श्रम-सीकरों से संभव नर्मदा आदि नदी

है। गोंडवाना की इस आदि भूमि पर करोड़ों वर्ष पूर्व नर्मदा का अस्तित्व था। इसलिए सनातन नदी है और जिस स्थान से वह निसृत होती है – वह सनातन तीर्थ है। आम्रकूट के इस नर्मदा उद्‌गम बिन्दु से ही मानो संस्कृतियों की यात्रा प्रारंभ होती है। नर्मदा, भारत की लोक संस्कृति की स्मृति रेखा है। विंध्याचल का यह भू–भाग जिसकी चट्टानी छाती पर से नर्मदा बहती है, विश्व की आदि संस्कृति को अपने गर्भ में छिपाए हुए है। नर्मदा के आसपास प्राप्त उत्खनन से यह सत्य उद्‌घाटित हुआ है कि नर्मदा की घाटी की संस्कृति संरचना का इतिहास लाखों वर्ष पुराना है। जब हिमालय ने जन्म नहीं लिया था, तब सतपुड़ा और विंध्य की संधिस्थली इस मेकल शैल माला से जैसे नर्मदा नदी ही प्रस्रवित नहीं हुई थी बल्कि एक विराट जीवन–धारा ही यहाँ से गतिशील हुई थी। अमरकंटक में नर्मदा को जन्म देने वाला शिव का रूपक कितना अर्थवान है। यह हमारी जातीय स्मृतियों की सर्जनात्मक प्रसंगोद्‌गर्भी उद्‌भावना भी है। आदि देव शंकर के श्रम–सीकरों से जन्म लेने वाली नर्मदा मानवीय जीवन के वृतांत की वह रचना है, जिसमें श्रम जन्य आनंद का आलोड़न–विलोड़न है। जो विंध्य और सतपुड़ा की जातियों के श्रांत काले शरीरों के पसीने की धार की तरह काली–काली चट्टानों को तोड़ती फोड़ती प्रवाहशीला है। शंकर तो कर्पूर गौर तब हुए जब वे हिमालय के कैलाश शिखर पर आरूढ़ हुए। शंकर की जटाओं से गंगावतरण का दिव्य रूप भी शिवपुरुष की इसी छवि से संबंधित है, किंतु नर्मदा को जन्म देने वाले शंकर गोंड, कोरकू और अन्य दक्षिणवर्ती जातियों के आराध्य हैं। उनके रंग रूप के अनुरूप ही काले पत्थर की पिण्डी में आकृतिवान होने वाले पहाड़ों, खाईयों, खेतों–खलिहानों में उनके साथ–साथ चलने वाले औघड़दानी शिव लोकचित्त के अनुरूप देवता हैं। यही वजह है कि लोक देवता के शरीर से निसृत नर्मदा सदैव लोक नदी की तरह स्मरण की जाती है। नर्मदा के उत्स के पास ही हम लोग खड़े थे। एक छोटी सी मंदिराकृति एक कुंड के बीचों बीच थी। एक विशाल चौगान में तीर्थ यात्री आवाजाही कर रहे थे। गुजरात, राजस्थान, उत्तरप्रदेश से लेकर धुर दक्षिण तक के तीर्थयात्री उस भीड़ में अपनी वेशभूषा से इस मध्यप्रदेश में भारत की रंग–बिरंगी छवि को प्रस्तुत कर रहे थे। नर्मदा का स्रोत कुंड वाला अपना स्थान बदलता रहा है। यह प्रश्न हमारे मन में इसलिए कौंधा कि इस कुंड के ऊपर भी एक कुंड–स्मृति स्थित है – वहीं एक प्राचीन शिव मंदिर भी है।

नर्मदा के उत्स कुंड से थोड़ा – सा ऊपर चलने पर 'माई की बगिया' है। माई की बगिया पहाड़ी ढलान पर है। जैसे पहाड़ को काटकर एक बगीची बनाई गई है। एक जल–धार भी यहाँ से प्रवाहित है। कुछ मंदिर भी यहाँ हैं। अब बगीची का बहुत सुव्यवस्थित रूप यहाँ नहीं है, किंतु नाम के आधार पर यह प्रकट है कि यह बगीची रही होगी, अभी यहाँ गुलबकावली के फूल खिले हुए थे। हमारी जिज्ञासाएँ ही हमें स्थानों से प्रतिक्रिया करने के लिए बाध्य करती हैं। हमने वहाँ बैठे कुछ संतो से पूछा कि यह नाम 'माई की बगिया' किस ऐतिहासिक तथ्य की ओर संकेत करता है – वे पहले तो कुछ असमंजस में दिखे, किंतु उन्होने एक रूपक को याद करते हुए हमें बताया। माई तो यहाँ नर्मदा ही हैं। हमने कहा – केवल अमरकंटक में ही नहीं – नर्मदा तो पूरे देश में माई ही है। वे बोले – 'हाँ माई नर्मदा बचपन में यहाँ अपनी सहेलियों के साथ खेलने आती थीं । जब वे नाराज होकर पश्चिम की ओर गतिशील हुईं तब उनकी सहेलियाँ उनके वियोग में गुलबकावली बन गई हैं। ये जो गुलबकावली के फूल देख रहे हो ये सब उनकी सहेलियाँ थीं' हम अचरज से भरे इस कथानक को सुन रहे थे और नदियों के फूल बन जाने की इस लोककथा का सत्य तलाशने में जुट गए थे। लगता है यहाँ कुछ और जल धारायें रही होंगी – नर्मदा तब इन जलधाराओं के साथ ही विचरणशील हुई होंगी – बाद में भू–भौतिकी ने कुछ करवट ली होगी और नर्मदा की प्रवाह दिशा बदल गई होगी, उनकी सहचरी जलधाराएँ कराल काल का ताप सहते–सहते सूख गई होंगी। उनकी सूखती स्मृतियों को लोक मानस ने तब फूलों में तब्दील कर दिया होगा। लेकिन गुलबकावली के फूल तो भारतीय परिवेश में अति प्राचीन नहीं हैं। हो सकता है ये फूल किन्हीं और फूलों को विस्थापित

करते हुए यहाँ जम गए हों। जो भी हो यह स्थान मनोरम है और कल्पना के घोड़ों को पंख लगाकर अतीत के आकाश में उड़ने को बाध्य कर देता हैं। आँखे जुड़ाती माई की बगिया का सौदर्य आसव बनकर शीशियों में उतर आया था। जब मैं यात्रा पर चला था तब मेरे गाँव के लोगों ने मुझसे कहा था कि माई की बगिया में आँखों की दवा मिलती है। लेते आना। सचमुच, वहाँ के गुलबकावली के फूलों से उतारी गई दवा वहाँ बिक रही थी। खण्डवा के डॉ. श्रीराम परिहार का फोन आया है कि माई की बगिया की दवा ने आँखों को बहुत शुकून दिया है। अमरकंटक आँख को ठंडा करता है, गुलबकावली के 'सत' से, तो हिमालय आँख को ठंडा करता है- अपने मर्मीरे के माध्यम से यहाँ पहाड़ों का आँख से रिश्ता है। माई की बगिया एकदम लोक आधारित कथानक है। जिसमें नर्मदा का मानवीय रूप प्रकट होता है।

लोक- गाथाएँ इतिहास के वे अमृत कुंड है, जहाँ से इतिहास की धाराएँ अपने अनेक रूपों में फूटती हैं। नर्मदा के जन्म क्षेत्र अमरकंटक में भी लोक गाथाओं का विचित्र किंतु सहज विश्वासी रूप समाया हुआ है। नर्मदा पश्चिम प्रवाहिनी हुई होगी, भू-भौतिकी परिवर्तनों के कारण, किंतु लोगों ने इसे अपनी स्मृति में एक कथा का रूप ही दे दिया। लोक में प्रचलित सोन और नर्मदा की प्रणय-कथा लोक की मिथकीय सृष्टि है। यह कथा - लीला भी अमरकंटक के इसी भूभाग पर जन्म लेती है। महाभारत में शोण और ज्योतिरथ्या के संगमन की चर्चा है। 'शोणस्य ज्योतिरथ्यायाः संगमे नियतः शुचिः। तर्पयित्वा पितृहन देवान निग्नष्ठोम फलं लभेत्।' शोण और ज्योतिरथ्या नदी के इस संगम पर जो तर्पण करते हैं, वे अपने पितरों और देवताओं को प्रसन्न करते हैं और अग्निष्ठोम यज्ञ का फल प्राप्त करते हैं। शोण और ज्योतिरथ्या क्रमशः सोन और जोहिला हैं।

सोन अपने उद्‌गम के साथ ही सैकड़ों फुट की ऊँचाई से नीचे गिरती है जबकि नर्मदा अपने उत्स कुंड से निकलकर एकदम शांत और सूक्ष्म रूप में बहती है। अपने उद्‌गम कुंड से चार-पाँच किलोमीटर की दूरी तक नर्मदा की क्षीणधारा का मंथर स्वभाव, उसके असल स्वरूप को प्रकट नहीं कर पाता जब वह 'कपिल धारा' के रूप में पहाड़ पर खड़ी ऊँचाई से कूदती है, तब नर्मदा का शक्ति आस्फालन लगातार टूटते स्फटिक जैसी सफेदी में प्रकट होती है। ऊँचाइयों को झुकाता उन्हें तोड़ता-मरोड़ता उन्हें घिसता-पिसता ही नर्मदा का चरफर स्वभाव और व्यक्तित्व उसे एक क्वांरी नदी की पहचान देता है।

इसे कपिलधारा इसलिए कहा जाता है कि कभी इस स्थल पर कपिलमुनि ने तपस्या की थी। अमरकंटक तपस्या स्थली है। न जाने कितने तपस्वी इस स्थल पर तपस्या करके अपनी उर्ध्व गति को प्राप्त हुए होंगे। किंतु मेरा मन जो अतीत और वर्तमान की धूप छाँह में अमरकंटक को अनुभव कर रहा था, वह यह मानते हुए भी कि यहाँ कपिलमुनि तपस्यारत रहे होंगे। एक नए भौगोलिक रूपक का विन्यास करने लगता है। 'कपिलधारा' का नामकरण मुझे बार-बार कपिला गौ से जोड़ रहा था, और मुझे लग रहा था जैसे यह नामकरण कपिला की शुभ्रता की समता पर ही किया गया है। नर्मदा का यह जल-प्रपात अपनी आकृति, अपने रंग में एकदम गाय जैसा दिखता है - इसी प्रपात के नीचे एक छोटा प्रपात है - यही कोई आधा किलोमीटर की नीचाई पर, इसे दूध धारा नाम दिया गया है। इन नामकरणों के पीछे गाय का ही रूपक है। कपिलधारा के रूप में जब नर्मदा नीचे छलाँग लगाती है, तब अतल में पड़ी-खड़ी विशाल चट्टानों की छाती दमच जाती है। करोड़ो वर्षो से नर्मदा इस गिरि गह्वर में अपनी बूँदों से हजारों इंद्रधनुष रच रही है।

कपिलधारा के एकदम नीचे पहुँचना आसान नहीं है। कूद-फाँद करके ही उस तक पहुँचा जा सकता है। पसीना-पसीना होते पहुँचिए तो नर्मदा की अमृत बूँदे फिर हमें तरोताजा कर देती हैं - लेकिन ऊपर ऊर्ध्वाधर आड़ी चट्टानों में लटके मधु-मक्खियों के छत्रों ने हमें भयभीत कर दिया। उल्लास और भय के बीच ही मधु का निवास है किंतु भयरहित होकर ही इस मधु का पान किया जा सकता है। अमरकंटक ऐसा ही 'मधु' क्षरित करता है - अपनी बीहड़ता में।

कुछ तंत्र-मंत्र साधकों ने यहाँ अपने स्थाई साधना-स्थल भी बना लिए हैं। अमरकंटक का एकांत किसे नहीं लुभाता है। यह क्षेत्र एक तरह का सिद्धि क्षेत्र है - इसलिए इसके चतुर्दिक् अनेक ऋषि-मुनि अपनी साधना में रत रहे हैं - इन ऋषियों-मुनियों के नाम से यहाँ अनेक ऐसे सिद्धाश्रम हैं जो जन-आस्था के केन्द्र हैं। तीर्थ-यात्री इन केन्द्रों की यात्रा करते हैं - और अमरकंटक की पावनता से परिचित ही नहीं होते, अपितु अपने भीतर भी इस भाव से भर उठते हैं।

नर्मदाष्टक की ध्वनियों को अपने कर्ण-कुहरों में बसाए हम अमरकंटक से वापस हो रहे थे। हमारी जीप ढलानों की आड़ी-तिरछी सीधी-सर्पिल सड़क को रौंदती हुई पेन्ड्रा रोड की दिशा में गतिशील थी, तभी मार्ग में एक मंदिर दिखा। मंदिर के पास एक कुआँ था - कुआँ पर कुछ पनिहारिनें पानी भर रही थीं। वे माई नर्मदा के गीत गा रही थीं। सहयात्री को कुआँ देखकर प्यास लगी। हम लोग नीचे उतरे। मंदिर के भीतर विराजे देवता के दर्शन किए। वहाँ उपस्थित साधुओं ने बताया कि यह जोहिला नदी का उद्गम स्थल है। मंदिर के समानांतर ही एक कुंड था - यही कुंड ही जोहिला का जन्म स्थान है। जोहिला के उत्स-कुंड में बहुत थोड़ा-सा जल था। आगे धार सूख गई थी। जोहिला का प्रवाह आगे सोन में संगम करती है। अमरकंटक का प्राकृतिक सौंदर्य उसे प्रकृत तीर्थ की तरह ही उपाख्यापित करता है। इसलिए इसकी निसर्ग महिमा इसे अलौकिक बनाती है, किंतु यह क्षेत्र लोक और शास्त्र की आँखों से निहारने पर ही अपनी सम्पूर्णता में प्रकट होता है - और अपनी सिद्धि भावना को विस्तारित करता है। अभी भी यहाँ के जंगलों में, पहाड़ों में हठयोगी मिल जाते हैं : हम लोगों ने अनेक जटिल और कठिन आसनों को लगाने वाले हठ योगी इस प्रकृत भूमि में देखे। तीर्थ की सहजता ही उसे दिव्य भाव प्रदान करती है। यह दिव्यता यदि अमरकंटक में अभी भी विद्यमान है तो यह अमरकंटक की वानस्पतिक और भू-भौतिक संरचना में भी तलाशी जा सकती है।

महाभारत में नर्मदा के स्रोत की चर्चा करते हुए इसके प्राकृतिक परिवेश की भी चर्चा की गई है, आम, प्रियंगु और बेल के पेड़ों से आच्छादित यह क्षेत्र अपनी हरीतिमा के सौन्दर्य से जनमन को आकर्षित करने वाला रहा है। इस नदी को प्रत्यक्स्रोता कहा गया है। 'प्रियङ्ग्वाम्र वणोपेता वानीर फल मालिनी प्रत्यक्स्रोता नदी पुण्या नर्मदा तत्व भारत।'

आर्या शप्तशती के कवि ने भी अमरकंटक से निसृता नर्मदा के प्यारे रूप का विवेचन अपनी कविताओं में किया है - 'मुक्तारबरै धावतु निपतत् सहसा निम्नगावास्तु। इत्यमेव नर्मदा ममवंश प्रभावन्तु रूप रसा।' आकाश मार्ग से नीचे आई त्रिपथगा गंगा भले ही आकाश गंगा, पातालगंगा और मर्त्यलोक की भागीरथी गंगा लोगों की दृष्टि में महिमा मंडित हो - मुझे तो केश गुल्मों से उद्भूत सुस्वादु जलवाली नर्मदा ही प्रिय है। कालिदास ने अपने ग्रंथों में नर्मदा के उत्स-वनों का जो मानवीकरण किया है - वह तो काव्य की उपलब्धि भी है, और नर्मदा के सौन्दर्य का असीमित वर्णन भी है। प्राकृत और अपभ्रंश के कवियों ने भी आम्रकूटिनी नर्मदा का वर्णन सरसता के साथ किया है। 'आम बहला वणाल मुहला जरं कुणों जलं सिसिरं। अण्वावारिणं वि रेवाई तटवी अंकी गुणा के वि।' अमरकंटक स्मृतियों की भूमि है। स्मृतियों की चुभन की भूमि है इसलिए यह स्मृति शल्य बहुत दिनों तक हृदय में धँसा रहता है और बार-बार अमरकंटक की यात्रा करने के लिए प्रेरित करता रहता है। हमारी यात्रा तो समाप्त हो गई थी किंतु अमरकंटक से निसृत होने वाली नर्मदा ने हमें एक नया जीवन दिया था - विपरीत से विपरीत को पार करने की ताकत हमें अमरकंटक से निकलने वाली एक सीधी-सादी नदी ने अपने वेगमान आचरण से दी है। अमकंटक हम फिर आएँगे - तुम्हारी आत्मीयता प्रकृति की आत्मीयता है - जिसमें हमारी उपस्थिति उतनी ही ऊँची है - जितनी तुम्हारी शैलशृंग मालाएँ हैं-हमारी हिम्मत उतनी ही अडिग है, जितनी नर्मदा की पतली सी धार की कटान है। जो खड़ी प्रस्तरी ऊँचाइयों को भी झुका देती है - अमरकंटक तुमसे हमने निर्भीकता पाई है- एकांत की साथी बनकर हमारी निर्भीकता हमें जो शक्तियाँ देती है, वे लोक में सिद्धियों का विकल्प बन जाती हैं। अमरकंटक तुम्हें प्रणाम!

अभ्यास

बोध प्रश्न -

1. अमरकंटक पहुँचने के लिए लेखक द्वारा बनाए गए मार्ग की रूपरेखा लिखिए।
2. 'कपिलधारा' नामकरण से लेखक ने कपिलधारा को किस तरह व्याख्यायित किया है ?
3. मधुछत्रों का वर्णन करते हुए लेखक ने मधु को प्राप्त करने की क्या विधि बतलाई है ?
4. कुआँ पर पनहारिनें क्या कर रही थी ? वे किसके गीत गा रही थी ?
5. पुराणों में नर्मदा की उत्पत्ति का वर्णन किस तरह से किया गया है ?
6. नर्मदा और सोन से संबंधित लोक कथा लिखिए।
7. 'माई की बगिया' का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।
8. ''विपरीत से विपरीत को पार करने की ताकत हमें अमरकंटक से निकलने वाली एक सीधी-सादी नदी ने अपने वेगवान आचरण से दी है '' इस कथन से लेखक का क्या आशय है ? लिखिए ।

योग्यता-विस्तार

1. आपने किसी दर्शनीय स्थल का भ्रमण किया होगा, उसे यात्रा-वृतान्त के रूप में लिखिए।
2. आपके गाँव/शहर के समीप बहने वाली नदी का उद्‌गम स्थल तथा उसके बहने का मार्ग पता कीजिए।
3. अमरकंटक के चित्रों को खोजकर उसका अलबम तैयार कीजिए।

शब्दार्थ

नमूदार= प्रकट, जाहिर। **अनियारे**= कँटीला, बाँका, बहादुर। **सुरमई**=सुरमे के रंग का, हल्का नीला। **आलोड़न-विलोड़न**=मथना, बिलौना। **मधु**=शहद, मद्य, पुण्यरस। **उत्स**=स्रोत, सोता, जलमय स्थान।